

**आदर्शप्रश्नपत्रम् - 2024-2025**  
**संस्कृतम् (केन्द्रिकम्) कोड सङ्ख्या -322**  
**कक्षा – द्वादशी**

समय: – होरात्रयम्

पूर्णाङ्काः - 80

**सामान्यनिर्देशाः -**

- कृपया सम्यक्तया परीक्षणं कुर्वन्तु यत् अस्मिन् प्रश्नपत्रे 11 पृष्ठानि मुद्रितानि सन्ति ।
- कृपया सम्यक्तया परीक्षणं कुर्वन्तु यत् अस्मिन् प्रश्नपत्रे 18 प्रमुखाः प्रश्नाः सन्ति ।
- अस्य प्रश्नपत्रस्य पठनाय 15 निमेषाः निर्धारिताः सन्ति । अस्मिन् अवधौ केवलं प्रश्नपत्रं पठनीयम् उत्तरपुस्तिकायां च किमपि न लेखनीयम् ।
- उत्तरलेखनात् पूर्वं प्रश्नपत्रानुसारं प्रश्नस्य क्रमाङ्कः अवश्यं लेखनीयः ।
- प्रत्येकं खण्डम् अधिकृत्य उत्तराणि एकस्मिन् स्थाने क्रमेण लेखनीयानि ।
- सर्वेषां प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लेखनीयानि ।
- प्रश्नानां निर्देशाः ध्यानेन अवश्यं पठनीयाः ।

**प्रश्नपत्रस्वरूपम् -**

अस्मिन् प्रश्नपत्रे चत्वारः खण्डाः सन्ति -

|                                  |             |
|----------------------------------|-------------|
| खण्डः (क) अपठित-अवबोधनम्         | - 10 अङ्काः |
| खण्डः (ख) रचनात्मककार्यम्        | - 15 अङ्काः |
| खण्डः (ग) अनुप्रयुक्तव्याकरणम्   | - 20 अङ्काः |
| खण्डः (घ) I. पठित-अवबोधनम्       | - 25 अङ्काः |
| II. संस्कृत-साहित्येतिहास-परिचयः | - 10 अङ्काः |

**खण्डः – क**

**अपठित – अवबोधनम् - 10 अङ्काः**

1. अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा प्रदत्तप्रश्नानामुत्तराणि संस्कृतेन लिखत –

मीरा कृष्णभक्तेषु अन्यतमा अस्ति । तस्याः जन्म १४९८ ई. तमे वर्षे कूडकी इति ग्रामे रत्नसिंहस्य गृहे अभवत् । अस्याः पतिः चित्तौड़गढ़स्य महाराजः भोजराजः आसीत् । शैशवात् एव मीरा कृष्णभक्तिलीना आसीत् । १५२१ इति वर्षे युद्धे व्रणितः तस्याः पतिः दिवङ्गतः । वैधव्यकाले तस्याः समयः विशेषतः कथाकीर्तनयोः पूजापाठयोः हरिचर्यायां च व्यतीतो भवति स्म । मीरायाः एतत्कृष्णप्रेम तस्याः देवराय

10

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |              |
|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------|
| <p>विक्रमाय न रोचते स्म । सः तां नानाविधैः क्लेशैः अपीडयत् । एकदा सः पुष्पहारेण सह सर्पं प्रेषितवान् । अन्येद्युः तस्याः जीवनलीलां समापयितुं विषपूरितं चषकं प्रेषयत् । परमेश्वरानुकम्पया सर्पस्तां न अदशत् । विषम् अपि तस्याः कृते अमृतमिव अभवत् । तस्मात् तस्याः विश्वासः कृष्णभक्तौ दृढाट्टढतरोऽभवत् । मीरायाः भक्तिभावपूर्णानि गेयपदानि प्रतिप्रान्तं श्रद्धया गीयन्ते । इयं किम्वदन्ती प्रसिद्धा अस्ति यत् मीरा द्वारिकायां श्रीकृष्णमूर्तौ विलयङ्गता ।</p>                                                                                                                                                                                                                 |              |
| <p>(अ) एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) मीरायाः पतिः कः आसीत्?</p> <p>(ii) का द्वारिकायां श्रीकृष्णमूर्तौ विलयङ्गता?</p> <p>(iii) कस्मिन् ग्रामे मीरा जन्म अलभत?</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             | <p>1×2=2</p> |
| <p>(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(i) विक्रमः मीरां हन्तुं किं किम् अकरोत्?</p> <p>(ii) वैधव्यकाले मीरायाः समयः कथं व्यतीतो भवति स्म?</p> <p>(iii) मीरायाः विश्वासः कृष्णभक्तौ कथं दृढाट्टढतरोऽभवत्?</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 | <p>2×2=4</p> |
| <p>(इ) अनुच्छेदस्य (द्वित्रिशब्दात्मकं) समुचितं शीर्षकं लिखत ।</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              | <p>1×1=1</p> |
| <p>(ई) यथानिर्देशम् उत्तरत- केवलं प्रश्नत्रयम्</p> <p>(i) 'एकदा सः पुष्पहारेण सह सर्पं प्रेषितवान् ।' अत्र सः इति सर्वनामपदं कस्मै प्रयुक्तम्?</p> <p>(क) मीरायै (ख) विक्रमाय</p> <p>(ग) चषकाय (घ) रत्नसिंहाय</p> <p>(ii) 'मीरायाः एतत्कृष्णप्रेम तस्याः देवराय विक्रमाय न रोचते स्म ।' इत्यत्र 'प्रेम' इति कर्तृपदस्य किं क्रियापदं प्रयुक्तम्?</p> <p>(क) मीरायाः (ख) देवराय</p> <p>(ग) न (घ) रोचते स्म</p> <p>(iii) 'सः तां नानाविधैः क्लेशैः अपीडयत् ।' अत्र किं विशेषणपदं प्रयुक्तम्?</p> <p>(क) सः (ख) ताम्</p> <p>(ग) नानाविधैः (घ) क्लेशैः</p> <p>(iv) 'अमृतम्' इत्यस्य पदस्य किं विलोमपदमत्र प्रयुक्तम्?</p> <p>(क) चषकम् (ख) विषम्</p> <p>(ग) व्रणितः (घ) व्यतीतः</p> | <p>1×3=3</p> |

| <p style="text-align: center;"><b>खण्ड: – ख</b><br/><b>रचनात्मक-कार्यम् - 15 अङ्काः</b></p> |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |        |
|---------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------|
| 2.                                                                                          | <p>भवान् स्वागतः । प्लास्टिक् इत्यस्य प्रयोगः पर्यावरण-नाशकः इति विषयम् अधिकृत्य मित्रम् सञ्चितं प्रति लिखिते पत्रे रिक्तस्थानानि पूरयित्वा उत्तरपुस्तिकायां लिखत ।</p> <p>यूजी-01, संस्कृतिभवनम्<br/>(i) -----<br/>दिनाङ्कः : 12 अप्रैल, 2024</p> <p>प्रिय मित्र (ii) -----!<br/>सस्नेहं (iii) -----</p> <p>अत्र कुशलं तत्रास्तु । ह्यः एव मम विद्यालये 'त्यज प्लास्टिक् रक्ष पर्यावरणम्' इति विषये एका गोष्ठी अभवत् । अत्रैव मया प्रथमवारं (iv) ----- यत् प्लास्टिक् इत्यस्य परिणामाः दूरगामिनः घातकाश्च भवन्ति । अन्यानि सर्वाणि वस्तूनि मृत्तिकायां विनश्य विलीयन्ते परं (v) ----- तु कदापि न अपक्षीयते । न इदं गलति न च विलीयते । एवं प्लास्टिक् इत्यस्य प्रयोगेण (vi) ----- कृते महती क्षतिः भवति । परं वयं प्रातः जागरणात् आरभ्य रात्रौ निद्रापर्यन्तं प्लास्टिक् इत्यस्य विविधवस्तूनां प्रयोगं (vii) ----- । किमधिकम् इयं लेखनी यया अहं लिखामि, अस्याः च पुनःपूरणी प्लास्टिक्-निर्मिता । कल्पयामि यदि एवमेव प्लास्टिक् इत्यस्य प्रयोगः वर्धिष्यते तर्हि किं भविष्यति ? वस्तुतः पर्यावरणस्य (viii) ----- एव अस्माकं रक्षणम् । आशासे त्वमपि जागरूकः भूत्वा अन्येभ्यः अपि प्रेरणां प्रदास्यसि । गृहे (ix) ----- मम प्रणामाः निवेदनीयाः ।</p> <p>भवतः अभिन्नमित्रम्<br/>(x) -----</p> <p style="text-align: center;"><b>मञ्जूषा</b></p> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px;"> <p>कुर्मः, ज्ञातम्, प्लास्टिक्, पितृभ्याम्, सञ्चित, नवदिल्लीतः, पर्यावरणस्य, रक्षणे, नमस्ते, स्वागतः ।</p> </div> | ½×10=5 |
| 3.                                                                                          | <p><b>मञ्जूषाप्रदत्त-पदसहायतया अधोलिखितां कथां पूरयत –</b></p> <p>एकः कश्चन महात्मा आसीत् । सः नित्यं (i) ----- लग्नः एकस्मिन् आश्रमे निवसति स्म । भक्ताः तं महात्मानं मेलितुम् आगच्छन्ति स्म । ते स्वसमस्याः अपि यदा कदा (ii) ----- कथयन्ति स्म । महात्मा अपि यथासामर्थ्यं तासां समाधानं सूचयति स्म । एकदा एका वृद्धा महिला महात्मानम् आगत्य (iii) ----- यत् अयं मम पौत्रः । एषः गुडस्य अत्यधिकं सेवनं करोति । कृपया भवान् एनं बोधयतु । महात्मा अवदत् यत् एकसप्ताहाद् अनन्तरम् आगच्छतु तदा (iv) ----- । सा पुनः एकसप्ताहाद् अनन्तरं महात्मानं (v) ----- बोधयितुं प्रार्थितवती । महात्मा</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       | ½×10=5 |

(vi) ----- एकसप्ताहादनन्तरम् आगन्तुम् अकथयत् । महात्मनि श्रद्धावती सा पुनः उक्ते समये प्राप्तवती । अधुना महात्मा तं बालकम् अबोधयत् – वत्स! अत्यधिकं (vii) ----- योग्यं न भवति । केभ्यश्चन दिवसेभ्यः अनन्तरं सा वृद्धा महात्मानम् असूचयत् यत् तस्याः (viii) ----- अधुना गुडभक्षणम् अत्यजत् । पुनः सा महात्मानम् अपृच्छत् यत् सः कथं वारद्वयं सप्ताहादनन्तरम् आगच्छतु इति अकथयत् यतः ‘वत्स! अत्यधिकं गुडभक्षणं योग्यं न भवति ।’ इत्येतत् वाक्यं तु पूर्वमपि वक्तुं (ix) -----? तदा महात्मा अकथयत् यदा भवती प्रार्थितवती आसीत् तदा अहमपि बहु गुडभक्षणं करोमि स्म, अतः अन्यं गुडत्यागाय वक्तुं मम अधिकारः न आसीत् । अहम् अभ्यासेन प्रयत्नपूर्वकं गुडत्यागम् अकरवम् । अतः अहं ततः परमेव बालकं बोधितवान् अपि च मम वचसः तस्मिन् प्रभावोऽपि जातः । वृद्धा अन्ये भक्ताश्च श्रद्धया (x) ----- अभवन् ।

#### मञ्जूषा

पौत्रः, शक्यते स्म, ईशस्तुत्याम्, प्रार्थितवती, पुनरेकदा,  
बोधयिष्यामि, नतमस्तकाः, महात्मानम्, पौत्रम्, गुडभक्षणम् ।

#### अथवा

अधोलिखितसंवादे मञ्जूषायाः सहायतया रिक्तस्थानानि पूरयत-

परिधिः - आद्ये! त्वम् अद्य अल्पाहारार्थं किम् आनीतवती?

आद्या - (i) -----

उदितः - अहम् ओदनं सूपञ्च आनीतवान् । परिधे! त्वं मध्यावकाशे भक्षणाय किम् आनयः?

परिधिः - (ii) -----

मीशा - मम पार्श्वे आलुकस्य चिप्स शीतलपेयं चास्ति ।

(iii) -----?

परिधिः - आम्, मह्यं शीतलपेयं रोचते ।

अभ्युदयः - (iv) -----

परिधिः - यद् वस्तु अस्मभ्यं न रोचते, तत् वयं कथं खादेम?

अभ्युदयः - (v) ----- ।

परिधिः - भवता सत्यं कथितम् । अग्रे वयं यत् स्वास्थ्याय हितकरं भवेत् तदेव आनेष्यामः ।

#### मञ्जूषा

(i) सर्वदा तथ्यमिदं स्मरणीयं यत् शुद्धं सात्त्विकं पौष्टिकं च भोजनमेव स्वास्थ्यरक्षकं भवति ।

(ii) मम माता मह्यं रोटिकां आलुकस्य शाकं च दत्तवती । परम् अहं तद् न इच्छामि ।

1×5=5

|                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |       |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|
|                                                                                                                              | <p>(iii) किं विस्मृतं त्वया यत् शीतलपेयं, चिप्सादिकानि जङ्गभोज्यवस्तूनि स्वास्थ्याय अहितकराणि भवन्ति ।</p> <p>(iv) अहम् इडली-साम्भरखाद्यम् आनीतवती । उदित! त्वं किम् आनयः?</p> <p>(v) किं भवत्यै शीतलपेयं रोचते?</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |       |
| 4.                                                                                                                           | <p><b>निम्नलिखितवाक्येषु केषाञ्चन पञ्चवाक्यानां संस्कृतेन अनुवादं कुरुत –</b></p> <p>(i) वैभव जोर जोर से हँसता है ।<br/>Vaibhav laughs loudly.</p> <p>(ii) तुम सब क्या पढ़ रहे हो?<br/>What are you all reading?</p> <p>(iii) बच्चे कहानी सुनेंगे ।<br/>Children will listen the story.</p> <p>(iv) तुम दोनों जोर से मत बोलो ।<br/>Both of you don't speak loudly.</p> <p>(v) किसान खेत में चले गए ।<br/>The farmers went to the field.</p> <p>(vi) अब हम दोनों को सो जाना चाहिए ।<br/>Now both of us should sleep.</p> | 1×5=5 |
| <p style="text-align: center;"><b>खण्ड: – ग</b></p> <p style="text-align: center;"><b>अनुप्रयुक्तव्याकरणम् 20 अङ्काः</b></p> |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |       |
| 5.                                                                                                                           | <p><b>अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां सन्धिं सन्धिच्छेदं वा कृत्वा लिखत-(केवलं प्रश्नषट्कम्)</b></p> <p>(i) धर्मात् + न प्रमदितव्यम् ।</p> <p>(ii) किम् अत्रापि + अलोभः?</p> <p>(iii) वैवस्वतो मनुर्नाम मनीषिणां माननीयः ।</p> <p>(iv) प्रभूणाम् आज्ञाम् उत् + लङ्घ्य आयातीति आक्रुश्यते ।</p> <p>(v) सः चिरं तपस्तेपे ।</p> <p>(vi) न + एकेन अपि समं गता वसुमती ।</p> <p>(vii) कटु सत्यं खल्वेतत् ।</p>                                                                                                               | 1×6=6 |

|    |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               |       |
|----|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|
| 6. | <p>अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां समुचितं समस्तपदं विग्रहवाक्यं वा प्रदत्तविकल्पेभ्यः चित्वा लिखत (केवलं प्रश्नपञ्चकम् )</p> <p>(i) परमात्मा <u>अनश्नन्</u> एव अभिचाकशीति ।<br/> (क) अन् अश्नन् (ख) अन् शनन्<br/> (ग) न अश्नन् (घ) अश्नस्य अभावः</p> <p>(ii) परस्परमनुव्रतौ <u>पतिपत्न्यौ</u> त्रिवर्गं साधयतः ।<br/> (क) पतिः च पत्नी च (ख) पति च पत्न्यौ च<br/> (ग) पती च पत्न्यौ च (घ) पत्या सह पत्नी</p> <p>(iii) <u>अपराधेन सह</u> अपि मे वचः क्षन्तव्यम् ।<br/> (क) अपराधसमम् (ख) निरपराधम्<br/> (ग) सापराधम् (घ) अपराधस्य योग्यम्</p> <p>(iv) <u>पाण्डित्येन सम्भृता मतिः यस्य सः</u> मितप्रभाषी भवति ।<br/> (क) पाण्डित्यसम्भृतमतिः (ख) पण्डितमतिः<br/> (ग) पाण्डित्येनसम्भृतमतिः (घ) पण्डितः</p> <p>(v) <u>दीर्घप्रयासेन</u> कृतं हि वस्तु ।<br/> (क) दीर्घात् प्रयासेन (ख) दीर्घेण प्रयासेन<br/> (ग) दीर्घ प्रयासेन (घ) दीर्घः प्रयासः</p> <p>(vi) राजभवने रात्रौ <u>प्राप्तपरिचयपत्राः</u> एव प्रविशन्ति ।<br/> (क) प्राप्तं परिचयपत्रं यैः ते (ख) प्राप्तं परिचयपत्रं यस्मात् सः<br/> (ग) प्राप्तं परिचयपत्रं येषां तेषाम् (घ) प्राप्तं परिचयपत्रम् येन सः</p> | 1×5=5 |
| 7. | <p>अधोलिखित-वाक्येषु रेखाङ्कितपदेषु प्रकृतिप्रत्ययौ संयोज्य विभज्य वा समुचितं रूपं प्रदत्तविकल्पेभ्यः चिनुत – (केवलं प्रश्नषट्कम्)</p> <p>(i) सत्यात्र <u>प्रमदितव्यम्</u> ।<br/> (क) प्र+मद्+तव्यत् (ख) प्र+मद्+शानच् न्<br/> (ग) प्र+मद्+अनीयर् (घ) प्र+मद्+क्त</p> <p>(ii) भृकुटिः नियतीव <u>व्यवस्थिता</u> ।<br/> (क) व्यवस्थित + तल् (ख) व्यवस्थित + टाप्<br/> (ग) वि + स्थिता (घ) व्यवस्थित + डीप्</p> <p>(iii) तदन्वये शुद्धिमति <u>प्रसूतः</u> शुद्धिमत्तरः ।<br/> (क) प्र + सू + क्तिन् (ख) प्र + सू + तः<br/> (ग) प्र + सू + क्त (घ) प्र + सू + क्तवतु</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          | 1×6=6 |

|    |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |       |
|----|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|
|    | <p>(iv) दौवारिकः तु तम् <u>नी + शतृ</u> एव प्राचलत् ।</p> <p>(क) नयत् (ख) नयन्</p> <p>(ग) नीतवान् (घ) नीतिः</p> <p>(v) <u>गुण + इन्</u> गुणं वेत्ति, न वेत्ति निर्बलः ।</p> <p>(क) गुणः (ख) गुणिनः</p> <p>(ग) गुणी (घ) गुणिनि</p> <p>(vi) भोजः किमपि वत्सराजं <u>कथ् + क्तवतु</u> ।</p> <p>(क) कथितवान् (ख) कथितवती</p> <p>(ग) कथयन् (घ) कथितः</p> <p>(vii) मया कतिपय बिन्दवः एव <u>प्राप्ताः</u> ।</p> <p>(क) प्र + आप् + क्तवतु (ख) प्र + आप् + क्तिन्</p> <p>(ग) प्र + आप् + तल् (घ) प्र + आप् + क्त</p>                                                                                  |       |
| 8. | <p><b>प्रदत्तविकल्पेभ्यः उचितविभक्तियुक्तं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत - (केवलं प्रश्नत्रयम्)</b></p> <p>(i) तस्याः कस्मिन् ----- स्पृहा, येन अकार्यं करिष्यति ।</p> <p>(क) फले (ख) फलाय</p> <p>(ग) फलात् (घ) फलस्य</p> <p>(ii) दिलीपस्य ----- सदृशः आगमः आसीत् ।</p> <p>(क) प्रज्ञायाः (ख) प्रज्ञाम्</p> <p>(ग) प्रज्ञया (घ) प्रज्ञा</p> <p>(iii) राजा ----- राज्यं दत्त्वा तदुत्सङ्गे भोजं मुमोच ।</p> <p>(क) मुञ्जम् (ख) मुञ्जाय</p> <p>(ग) मुञ्जस्य (घ) मुञ्जेन</p> <p>(iv) ----- न प्रमदितव्यम् ।</p> <p>(क) स्वाध्याये (ख) स्वाध्यायस्य</p> <p>(ग) स्वाध्यायेन (घ) स्वाध्यायात्</p> | 1×3=3 |
|    | <p><b>खण्डः - घ भागः - I</b></p> <p><b>पठितांशावबोधनम् 25 अङ्काः</b></p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     |       |
| 9. | <p><b>अधोलिखितं गद्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् यथानिर्देशं संस्कृतेन उत्तरत -</b></p> <p>राज्ञः वह्निप्रवेश-कार्यक्रमं श्रुत्वा वत्सराजः बुद्धिसागरं नत्वा शनैः शनैः प्राह - तात! मया भोजराजो रक्षित एवास्ति । पुनः बुद्धिसागरेण तस्य कर्णे किमपि कथितम्, यन्निशम्य वत्सराजः ततो निष्क्रान्तः । पुनः राज्ञो वह्निप्रवेशकाले कश्चन कापालिकः सभां समागतः । सभामागतं कापालिकं दण्डवत् प्रणम्य</p>                                                                                                                                                                                       | 5     |

|     |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          |                                                                                                                             |
|-----|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
|     | <p>मुञ्जः प्रावोचत् - हे योगीन्द्र! मया हतस्य पुत्रस्य प्राणदानेन मां रक्षेति । अथ कापालिकस्तं प्रावोचत् - राजन्! मा भैषीः । शिवप्रसादेन सः जीवितो भविष्यति । तदा श्मशानभूमौ कापालिकस्य योजनानुसारं भोजः तत्र समानीतः । 'योगिना भोजो जीवितः इति कथा लोकेषु प्रसृता ।</p> <p>अ. एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) भोजः कुत्र समानीतः?</p> <p>(ख) राज्ञः वह्निप्रवेशकाले कः सभां समागतः?</p> <p>(ग) भोजः कस्य प्रासादेन जीवितो भविष्यति?</p> <p>आ. पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) वत्सराजो बुद्धिसागरं नत्वा किं प्राह?</p> <p>(ख) लोकेषु का कथा प्रसृता?</p> <p>(ग) मुञ्जः कापालिकं किं प्रार्थयत्?</p> <p>इ. यथानिर्देशम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) 'प्राह' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्?</p> <p>(ख) 'मया हतस्य पुत्रस्य प्राणदानेन मां रक्षेति ।' अत्र 'पुत्रस्य' इति पदस्य किं विशेषणं प्रयुक्तम्?</p> <p>(ग) 'अग्निः' इति पदस्य पर्यायपदं किमत्र प्रयुक्तम्?</p> | <p><math>\frac{1}{2} \times 2 = 1</math></p> <p><math>1 \times 2 = 2</math></p> <p><math>1 \times 2 = 2</math></p>          |
| 10. | <p>अधोलिखितं पद्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् यथानिर्देशं संस्कृतेन उत्तरत -</p> <p>अल्पज्ञ एव पुरुषः प्रलपत्यजस्रं<br/>पाण्डित्यसम्भृतमतिस्तु मितप्रभाषी ।<br/>कांस्यं यथा हि कुरुतेऽतितरां निनादं<br/>तद्वत्सुवर्णमिह नैव करोति नादम् ॥</p> <p>अ. एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) किं अतितरां निनादं करोति?</p> <p>(ख) अल्पज्ञः पुरुषः कथं प्रलपति?</p> <p>(ग) पाण्डित्यसम्भृतमतिः कीदृशः भवति?</p> <p>आ. पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) कः निरन्तरं प्रलापं करोति?</p> <p>(ख) कांस्यवत् नादं कः न करोति?</p> <p>(ग) अल्पज्ञ-पाण्डित्ययोः मध्ये कः भेदः?</p> <p>इ. यथानिर्देशम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) श्लोके 'निरन्तरम्' इत्यर्थे किं पदम्?</p> <p>(ख) श्लोके 'प्रलपति' इति क्रियायाः कर्तृपदं किम्?</p>                                                                                                                                               | <p>5</p> <p><math>\frac{1}{2} \times 2 = 1</math></p> <p><math>1 \times 2 = 2</math></p> <p><math>1 \times 2 = 2</math></p> |

|     |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |                                                                                                                             |
|-----|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
|     | (ग) श्लोके 'निनादम्' इत्यस्य किं विशेषणपदं विद्यते?                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                            |                                                                                                                             |
| 11. | <p>अधोलिखितं नाट्यांशं पठित्वा तदाधारितान् प्रश्नान् यथानिर्देशं संस्कृतेन उत्तरत -</p> <p><b>कुण्डला</b> - जाने तेऽभिरुचिम् अध्ययने अध्यापने च । परं यथा लतेयं सहकारमवलम्बते तथैव नारी जीवनयात्रायां कमपि सहचरम् अपेक्षते यः तस्याः अवलम्बनं स्यात् ।</p> <p><b>मदालसा</b> - नास्ति मत्कृते आवश्यकता अवलम्बनस्य । स्वयं समर्था जीवनपथे चलितुमहम् । न कस्यापि सङ्केतैः नर्तितुं पारयामि ।</p> <p><b>कुण्डला</b> - नर्तिष्यसि तदा एकाकिनी एव ।</p> <p>(विहस्य) यदि त्वं शीघ्रमेव पतिगृहं गमिष्यसि तदा एकाकिनी भविष्यामि ।</p> <p><b>मदालसा</b> - परम् एकः उपायः अपि चिन्तितः मया ।</p> <p><b>कुण्डला</b> - कः उपायः ?</p> <p><b>मदालसा</b> - सङ्गीतसाहित्यमाध्यमेन ब्रह्मविद्यां सरसां विधाय बहुभ्यः शिशुभ्यः शिक्षणं प्रदास्यामि ।</p> <p>(अ) एकपदेन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) मदालसा केभ्यः शिक्षणं प्रदास्यति?</p> <p>(ख) कुण्डला मदालसायाः किं जानाति?</p> <p>(ग) नारी कुत्र कमपि सहचरम् अपेक्षते?</p> <p>(आ) पूर्णवाक्येन उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) कुण्डला विहस्य मदालसां किं कथयति?</p> <p>(ख) मदालसा कस्मिन् स्वयं समर्था अस्ति?</p> <p>(ग) केन माध्यमेन मदालसा बहुभ्यः शिशुभ्यः शिक्षणं प्रदास्यति?</p> <p>(इ) निर्देशानुसारम् उत्तरत - (केवलं प्रश्नद्वयम्)</p> <p>(क) 'एकः' इति पदस्य विशेष्यं किम्?</p> <p>(ख) 'गमिष्यसि' इति क्रियापदस्य कर्तृपदं किम्? )</p> <p>(ग) अत्र 'हसित्वा' इत्यर्थे किं पदं प्रयुक्तम्?</p> | <p>5</p> <p><math>\frac{1}{2} \times 2 = 1</math></p> <p><math>1 \times 2 = 2</math></p> <p><math>1 \times 2 = 2</math></p> |
| 12. | <p>अधोलिखितस्य पद्यस्य भावार्थं मञ्जूषाप्रदत्तपदैः पूरयित्वा पुनः लिखत -</p> <p>न दुर्जनः सज्जनतामुपैति शठः सहस्रैरपि शिक्ष्यमाणः ।</p> <p>चिरं निमग्नोऽपि सुधा-समुद्रे न मन्दरो मार्दवमभ्युपैति ॥</p> <p><b>भावार्थः</b> - दुर्जनः शठः (i) ----- सज्जनैः अपि शिक्ष्यमाणः कदाचित् (ii) ----- न प्राप्नोति । यथा अमृतस्य समुद्रे चिरकालं यावत् (iii) ----- मन्दरः पर्वतः कोमलत्वं न प्राप्नोति । अतः शठस्य अवबोधनं तु सर्वथा व्यर्थमेव ।</p> <p><b>मञ्जूषा</b></p> <p>सज्जनताम्, सहस्रैः, निमग्नः ।</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         | <p><math>1 \times 3 = 3</math></p>                                                                                          |

|                                                                                                                                                            |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |                                                                                                                                                            |                                                                                                                                                             |       |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------|
|                                                                                                                                                            | <p style="text-align: center;"><b>अथवा</b></p> <p>प्रदत्तात् भावार्थत्रयात् शुद्धं भावार्थं चित्वा लिखत-</p> <p>(क) "नैकेनापि समं गता वसुमती नूनं त्वया यास्यति ।"</p> <p>(i) मृत्योः अनन्तरम् एषा पृथिवी केनापि सह न गतवती निश्चितमेव त्वया सह गमिष्यति ।</p> <p>(ii) एषा पृथिवी अनेकैः सह गमिष्यति ।</p> <p>(iii) एषा वसुमती कदापि न गच्छति ।</p> <p>(ख) "एकेनापि सुपुत्रेण सिंही स्वपिति निर्भयम् ।"</p> <p>(i) पुत्रेण मातुः गौरवं न वर्धते ।</p> <p>(ii) गुणवता पुत्रेण एव माता निर्भया भवति ।</p> <p>(iii) गुणहीनेन पुत्रेण माता निर्भया भवति ।</p> <p>(ग) 'रोदितव्ये काले सौमित्रिणा धनुर्गृहीतम् ।"</p> <p>(i) सुमित्रा अपि वनं गच्छति ।</p> <p>(ii) लक्ष्मणः रामस्य वनगमनं श्रुत्वा रोदिति ।</p> <p>(iii) शोकस्य समये लक्ष्मणः युद्धाय तत्परः अस्ति ।</p> | 1×3=3                                                                                                                                                      |                                                                                                                                                             |       |
| 13.                                                                                                                                                        | <p>अधोलिखित- श्लोकस्य प्रदत्ते अन्वये रिक्तस्थानपूर्तिं कुरुत –</p> <p style="text-align: center;">वनगमननिवृत्तिः पार्थिवस्यैव तावन्मम पितृपरवत्ता बालभावः स एव ।<br/>नवनृपतिविमर्शो नास्ति शङ्का प्रजानामथ च न परिभोगैर्वञ्चिता भ्रातरो मे ॥</p> <p>अन्वयः – तावत् (i) ----- वनगमननिवृत्तिः एव मम पितृपरवत्ता बालभावः सः<br/>एव । (ii) ----- प्रजानाम् शङ्का न अस्ति । अथ च मे (iii) -----<br/>परिभोगैः न वञ्चिताः ।</p> <p style="text-align: center;"><b>मञ्जूषा</b></p> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; text-align: center;">भ्रातरः, नवनृपतिविमर्शो, पार्थिवस्य ।</div>                                                                                                                                                                    | 1×3=3                                                                                                                                                      |                                                                                                                                                             |       |
| 14.                                                                                                                                                        | <p>'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह मेलनं कुरुत -</p> <table style="width: 100%; border: none;"><tr><td style="width: 50%; vertical-align: top;"><p><b>'क' स्तम्भः</b></p><p>(i) ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ</p><p>(ii) तेजः क्षमा धृतिः</p><p>(iii) आह्लादितं कुलं सर्वम्</p><p>(iv) यशसे विजिगीषूणाम्</p></td><td style="width: 50%; vertical-align: top;"><p><b>'ख' स्तम्भः</b></p><p>(क) शौचमद्रोहो नातिमानिता ।</p><p>(ख) प्रजायै गृहमेधिनाम्</p><p>(ग) त्यागे श्लाघाविपर्ययः</p><p>(घ) यथा चन्द्रेण शर्वरी</p></td></tr></table>                                                                                                                                                                                                           | <p><b>'क' स्तम्भः</b></p> <p>(i) ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ</p> <p>(ii) तेजः क्षमा धृतिः</p> <p>(iii) आह्लादितं कुलं सर्वम्</p> <p>(iv) यशसे विजिगीषूणाम्</p> | <p><b>'ख' स्तम्भः</b></p> <p>(क) शौचमद्रोहो नातिमानिता ।</p> <p>(ख) प्रजायै गृहमेधिनाम्</p> <p>(ग) त्यागे श्लाघाविपर्ययः</p> <p>(घ) यथा चन्द्रेण शर्वरी</p> | ½×4=2 |
| <p><b>'क' स्तम्भः</b></p> <p>(i) ज्ञाने मौनं क्षमा शक्तौ</p> <p>(ii) तेजः क्षमा धृतिः</p> <p>(iii) आह्लादितं कुलं सर्वम्</p> <p>(iv) यशसे विजिगीषूणाम्</p> | <p><b>'ख' स्तम्भः</b></p> <p>(क) शौचमद्रोहो नातिमानिता ।</p> <p>(ख) प्रजायै गृहमेधिनाम्</p> <p>(ग) त्यागे श्लाघाविपर्ययः</p> <p>(घ) यथा चन्द्रेण शर्वरी</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        |                                                                                                                                                            |                                                                                                                                                             |       |
| 15.                                                                                                                                                        | <p>अधोलिखितेषु वाक्येषु रेखाङ्कितपदानां प्रसङ्गानुसारं शुद्धम् उत्तरं चित्वा लिखत –</p> <p>(i) भूल्यै न प्रमदितव्यम् ।</p> <p>(ii) रोदितव्ये काले सौमित्रिणा धनुर्गृहीतम् ।</p>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    | ½×4=2                                                                                                                                                      |                                                                                                                                                             |       |

|                                                                                       |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          |                 |                 |                   |             |                  |                           |                      |                   |                  |          |       |
|---------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------|-----------------|-------------------|-------------|------------------|---------------------------|----------------------|-------------------|------------------|----------|-------|
|                                                                                       | <p>(iii) ततस्तयोरेवम् अभूत् <u>आलापः</u> ।</p> <p>(iv) सेतुर्येन महोदधौ विरचितः कासौ <u>दशास्यान्तकः</u> ।</p> <p style="text-align: center;"><b>मञ्जूषा</b></p> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; text-align: center;">वार्तालापः, ऐश्वर्याय, श्रीरामः, लक्ष्मणेन</div>                                                                                                                                                                                |                 |                 |                   |             |                  |                           |                      |                   |                  |          |       |
| <p><b>खण्डः – घ भागः - ii 10 अङ्काः</b></p> <p><b>सामान्यसंस्कृतसाहित्यपरिचयः</b></p> |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          |                 |                 |                   |             |                  |                           |                      |                   |                  |          |       |
| 16.                                                                                   | <p><b>अधोलिखित-प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत- (केवलं प्रश्नत्रयम् )</b></p> <p>(i) ‘कार्याकार्यव्यवस्थितिः’ इत्यस्य पाठस्य सन्दर्भग्रन्थः कः?</p> <p>(ii) ‘तैत्तिरीयोपनिषद्’ इति ग्रन्थात् कः पाठः सङ्कलितः?</p> <p>(iii) अम्बिकादत्तव्यासस्य रचनायाः कः पाठः सङ्कलितः?</p> <p>(iv) ‘प्रजानुरञ्जको नृपः’ इत्यस्य पाठस्य कर्त्ता कः?</p>                                                                                                                                      | 1×3=3           |                 |                   |             |                  |                           |                      |                   |                  |          |       |
| 17.                                                                                   | <p><b>मञ्जूषायाः समुचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानानि पूरयत – (केवलं प्रश्नत्रयम्)</b></p> <p>(i) ----- सर्गेषु निबद्धं भवति ।</p> <p>(ii) भारवेः ----- प्रसिद्धं वर्तते ।</p> <p>(iii) दण्डिनः ----- अतिगौरवं वहति ।</p> <p>(iv) ऐतिहासिकघटनाधारितं गद्यकाव्यम् ----- इति कथ्यते ।</p> <p style="text-align: center;"><b>मञ्जूषा</b></p> <div style="border: 1px solid black; padding: 5px; text-align: center;">पदलालित्यम्, अर्थगौरवम्, आख्यायिका, महाकाव्यम्</div>       | 1×3=3           |                 |                   |             |                  |                           |                      |                   |                  |          |       |
| 18.                                                                                   | <p><b>समुचितं मेलयाम ।</b></p> <table style="width: 100%; border: none;"><tr><td style="text-align: center; width: 50%;"><b>भागः - क</b></td><td style="text-align: center; width: 50%;"><b>भागः - ख</b></td></tr><tr><td>(i) उरुभङ्गनाटकम्</td><td>(क) शूद्रकः</td></tr><tr><td>(ii) मृच्छकटिकम्</td><td>(ख) सप्ताङ्गात्मकं नाटकम्</td></tr><tr><td>(iii) मुद्राराक्षसम्</td><td>(ग) भवभूतेः कृतिः</td></tr><tr><td>(iv) मालतीमाधवम्</td><td>(घ) भासः</td></tr></table> | <b>भागः - क</b> | <b>भागः - ख</b> | (i) उरुभङ्गनाटकम् | (क) शूद्रकः | (ii) मृच्छकटिकम् | (ख) सप्ताङ्गात्मकं नाटकम् | (iii) मुद्राराक्षसम् | (ग) भवभूतेः कृतिः | (iv) मालतीमाधवम् | (घ) भासः | 1×4=4 |
| <b>भागः - क</b>                                                                       | <b>भागः - ख</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          |                 |                 |                   |             |                  |                           |                      |                   |                  |          |       |
| (i) उरुभङ्गनाटकम्                                                                     | (क) शूद्रकः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                 |                 |                   |             |                  |                           |                      |                   |                  |          |       |
| (ii) मृच्छकटिकम्                                                                      | (ख) सप्ताङ्गात्मकं नाटकम्                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |                 |                 |                   |             |                  |                           |                      |                   |                  |          |       |
| (iii) मुद्राराक्षसम्                                                                  | (ग) भवभूतेः कृतिः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        |                 |                 |                   |             |                  |                           |                      |                   |                  |          |       |
| (iv) मालतीमाधवम्                                                                      | (घ) भासः                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |                 |                 |                   |             |                  |                           |                      |                   |                  |          |       |

\*\*\*\*\*OXXO\*\*\*\*\*OXXO\*\*\*\*\*